जया एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Jaya Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 43, controlling revision 336424. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 43 — full electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 43 — whole English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.43.1–54, Sanskrit Wikisource revision 336424, not a transcription of the original text.

जया का परिचय और दिव्य संगीत सभा

KATHA 6.43.1–14

युधिष्ठिर कृष्ण को आदिदेव कहकर स्वेदज, अण्डज, उद्भिज्ज और जरायुज जीवों के सृष्टिकर्ता, पालक तथा संहारकर्ता के रूप में सम्बोधित करते हैं। षट्तिला का वर्णन सुनकर वे माघ शुक्ल एकादशी का नाम, विधि और पूज्य देवता पूछते हैं। कृष्ण जया का नाम बताते हैं। इसकी पवित्रता, पाप और ब्रह्महत्या का नाश, इच्छापूर्ति, मोक्ष तथा पिशाच और प्रेत अवस्था से मुक्ति की धार्मिक प्रशंसा करते हुए पुराणिक कथा सुनने को कहते हैं। पद्म पुराण में इसकी महिमा कही होने का उल्लेख है।

कथा में इन्द्र का स्वर्ग सुन्दर है। देव अमृत पीते और अप्सराओं के साथ रहते हैं; नन्दन वन पारिजात से सुशोभित है। प्रसन्न इन्द्र नृत्य कराते हैं और पाठ उन्हें पचास करोड़ का नायक कहता है। यह पुराणिक संख्या है, आधुनिक जनगणना नहीं। वहाँ पुष्पदन्तक, चित्रसेन तथा चित्रसेन की पुत्री जैसे दिव्य कलाकार गाते हैं।

चयनित संस्कृत में मालिनी चित्रसेन की पत्नी और पुष्पदन्ती मालिनी से उत्पन्न कही गई हैं। पुष्पदन्त का पुत्र माल्यवान पुष्पदन्ती के रूप पर मोहित होता है। अंग्रेज़ी तुलना मालिनी को चित्रसेन की पुत्री कहती है; यहाँ संस्कृत का पत्नी वाला पाठ रखा गया और पहले उल्लिखित पुत्री का नया नाम नहीं गढ़ा गया। चार जन्म-श्रेणियाँ भी प्राचीन वर्गीकरण हैं, आधुनिक जीवविज्ञान का दावा नहीं।

Yudhishthira addresses Krishna as the primordial deity, creator, protector and destroyer of beings described as born from moisture, eggs, sprouting and the womb. Having heard Shattila, he asks the name, method and worshipped deity of Magha's bright-fortnight Ekadashi. Krishna names Jaya and praises its purity, removal of sin and Brahmahatya, fulfilment of wishes, liberation and release from pishacha and preta states. He invites the king to hear a Puranic story, referring to its praise within the Padma Purana.

In the narrative, Indra's heaven is beautiful. Gods drink nectar and live with apsaras; the Nandana grove is adorned with parijata. A delighted Indra arranges dancing; the text calls him lord of fifty crore. This is a Puranic number, not a modern population statistic. Celestial performers include Pushpadantaka, Chitrasena and Chitrasena's daughter.

The selected Sanskrit identifies Malini as Chitrasena's wife and Pushpadanti as born of Malini. Pushpadanta's son Malyavan is captivated by Pushpadanti's beauty. The English comparison calls Malini Chitrasena's daughter; this reader retains Sanskrit's wife reading without inventing a name for the previously mentioned daughter. The four birth categories likewise belong to an ancient classification, not a claim about modern biology.

रूप-वर्णन, संगीत और इन्द्र का शाप

KATHA 6.43.15–32

पुष्पदन्ती की दृष्टि माल्यवान को आकर्षित करती है। कविता उसकी बाँहों को कामदेव के बन्धन, बड़ी घूमती और लाल किनारों वाली आँखों को कानों तक फैली, कानों को कुण्डलों से सुशोभित और गर्दन को शंख-जैसी बताती है। दिव्य आभूषण, सोने के कलशों-जैसे उन्नत वक्ष, पतली कमर, विस्तृत नितम्ब और लाल कमलों-जैसे चरण उस शास्त्रीय सौन्दर्य-वर्णन के भाग हैं। इकाई 20 में पुष्पवती नाम आता है, जबकि आसपास पुष्पदन्ती है; यह स्रोत का नाम-भेद है, यहाँ अलग नई पात्र नहीं बनाई गई।

इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए दोनों नृत्य और गायन में आते हैं। अप्सराओं से घिरे, परस्पर प्रेम और आकर्षण में डूबे वे सही गायन नहीं कर पाते; दृष्टियाँ एक-दूसरे पर हैं और ताल, क्रिया तथा मात्रा छूटती हैं। इन्द्र इसे अपना अपमान मानते और क्रोध में उन्हें पतित, मूर्ख और आज्ञाभंग करने वाले कहकर शाप देते हैं: पति-पत्नी पिशाच बनकर मर्त्यलोक में अपने कर्म का फल भोगें। यह कथा का कठोर संवाद है, प्रेम या गलती पर अपमान और दण्ड का समर्थन नहीं।

दुखी दोनों हिमालय पहुँचते हैं। पिशाच अवस्था में कठोर कष्ट, हिम से पीड़ा और अपने गन्धर्व तथा अप्सरा रूप का विस्मरण वर्णित है। पाठ निदाघ की तपन और शरीरगत पाप की पीड़ा भी कहता है; इस विरोधी गरमी-शीत वर्णन से नया मौसम या यात्रा नहीं बनाई गई। रात को सुख या शान्ति नहीं मिलती, वे पर्वत की गुफाओं में बहस करते फिरते हैं। हिम-शीत से दाँत बजते और शरीर के रोएँ खड़े होते हैं। पुरुष अपनी पिशाचिनी पत्नी से पूछता है कि कौन-सा बड़ा और भयावह पाप ऐसा कष्ट लाया। बीमारी या ठण्ड से पीड़ित किसी वास्तविक व्यक्ति को पापी नहीं कहा जाता।

Pushpadanti's glances captivate Malyavan. The poem compares her arms to Cupid's bonds; her large, rolling eyes with red corners reach towards her ears. Earrings adorn her ears, and her neck is conch-like. Divine ornaments, an elevated chest compared to golden vessels, a slender waist, broad hips and feet glowing like red lotuses complete this classical beauty description. Unit 20 uses Pushpavati while surrounding units use Pushpadanti: this is a source name variation, not a newly invented character.

The two join the dancing and singing to please Indra. Surrounded by apsaras but absorbed in mutual love and attraction, they fail to sing correctly; their eyes stay on one another and rhythm, movement and measure lapse. Indra treats this as an insult and angrily calls them fallen fools who disobeyed him. He curses them to become husband and wife pishachas in the mortal world, experiencing their deeds' fruit. This harsh narrative dialogue does not endorse humiliation or punishment for love or mistakes.

Distressed, they reach the Himalaya. Their pishacha state involves severe suffering, icy hardship and forgetting their former Gandharva and apsara identities. The text also mentions nidagha heat and bodily sin-related suffering; no invented season or journey resolves the opposing heat-and-cold language. At night they find neither comfort nor peace, arguing as they wander mountain caves. Snowy cold makes their teeth chatter and body hair rise. The male asks his pishachini wife what great, terrifying wrongdoing brought this suffering. No real person suffering illness or cold is labelled sinful.

अनजाना व्रत और द्वादशी का परिवर्तन

KATHA 6.43.33–44

उसका प्रश्न पिशाच अवस्था को अपने दुष्कर्म से जोड़ता और नरक तथा इस कष्ट को भयावह कहकर पाप से बचने का विचार रखता है। दुख में विचार करते दोनों के लिए दैवयोग से माघ की जया एकादशी आती है। उस दिन वे भोजन और जल नहीं लेते, किसी जीव की हत्या नहीं करते और पत्ते या फल भी नहीं खाते। वे अश्वत्थ के पास दुखी रहते हैं।

सूर्य अस्त होता और प्राणहर कही कठोर रात आती है। काँपते दोनों धरती पर लेटते, शरीर और बाँहों से एक-दूसरे से सटते हैं। इकाई 39 का सुषुपतः सोने या लेटने का शब्द है, पर 40 स्पष्ट कहती है कि न नींद, न रति, न सुख मिला। दोनों कथन रखे गए हैं: लेटने को विश्रामपूर्ण नींद होने का प्रमाण नहीं बनाया गया।

इन्द्र के शाप से पीड़ित उनकी रात बीतती है। द्वादशी पर सूर्य उगता है। कृष्ण कहते हैं कि उन्होंने मन में दोनों की मुक्ति धारण की, क्योंकि जया का व्रत और रात का जागरण हुआ। विष्णु के प्रभाव से पिशाच अवस्था समाप्त होती है और पुष्पदन्ती तथा माल्यवान अपने पुराने रूप पाते हैं।

यह अनजाने अभाव की धार्मिक व्याख्या है, बिना पानी रहना, ठण्ड सहना, धरती पर सोना या नींद छोड़ना सिखाने वाली विधि नहीं। भोजन, पानी, गरमी, सुरक्षित विश्राम और देखभाल उपलब्ध रखें। पिशाच या शाप की कथा न बीमारी का निदान है, न किसी व्यक्ति पर प्रेतबाधा का निर्णय।

His question connects their pishacha condition with their own wrongdoing, describes hell and this suffering as terrible, and leads to a resolve to avoid wrongdoing. As they reflect in distress, Magha's Jaya Ekadashi arrives providentially. That day they take neither food nor water, kill no living creature and eat neither leaves nor fruit. They remain sorrowful near an ashvattha tree.

The sun sets and a harsh night described as life-threatening arrives. Trembling, they lie on the ground, pressing their bodies and arms together. Unit 39 uses sushupatah, a word for sleeping or lying down, while 40 explicitly says they found neither sleep, sexual intimacy nor comfort. Both statements are retained: lying down is not treated as proof of restful sleep.

Their night under Indra's curse passes. The sun rises on Dwadashi. Krishna says he held their liberation in his heart, recognising their Jaya observance and night vigil. Through Vishnu's power their pishacha condition ends and Pushpadanti and Malyavan regain their former forms.

This is a religious interpretation of unintended deprivation, not instructions to go without water, endure cold, sleep on bare ground or forgo sleep. Keep food, water, warmth, safe rest and care available. The pishacha and curse narrative is neither a medical diagnosis nor a judgment that a real person is possessed.

स्वर्ग-वापसी, इन्द्र का उत्तर और समापन

KATHA 6.43.45–54

पुराने स्नेह और आभूषणों सहित दोनों विमान पर चढ़कर सुन्दर स्वर्ग जाते हैं। यह पुराणिक विमान है,

आधुनिक हवाई जहाज़ का इतिहास नहीं। इन्द्र के सामने प्रसन्न होकर प्रणाम करते हैं। चकित इन्द्र पूछते हैं कि किस पुण्य से पिशाच अवस्था गई और किस देव ने उनका शाप हटाया।

माल्यवान कहते हैं कि वासुदेव की कृपा, जया व्रत और इन्द्र के प्रति उनकी भक्ति के प्रभाव से मुक्ति हुई। इन्द्र को सम्बोधित तुम्हारी भक्ति वाला पद केवल विष्णु की भक्ति में नहीं बदला गया। इन्द्र दोनों को पवित्र, पावन और अपने लिए भी वन्दनीय कहते हैं। हरिवासर करने वाले, विष्णु-भक्त और कृष्ण-परायण मनुष्य देवों के लिए भी पूज्य कहे जाते हैं। इन्द्र माल्यवान को पुष्पदन्ती के साथ स्वर्ग में सुखपूर्वक रहने की अनुमति देते हैं; संस्कृत इकाई 51 की यह विदाई अंग्रेज़ी तुलना में छूटती है, यहाँ नहीं।

कृष्ण राजा से इसी कारण हरिवासर करने को कहते हैं। जया की ब्रह्महत्या-नाशक प्रशंसा, उसके व्रत को सभी दान और यज्ञ के बराबर कहना, करोड़ कल्प तक वैकुण्ठ में आनन्द तथा पढ़ने-सुनने पर अग्निष्टोम का फल बताना पूर्ण समापन में है। ये धार्मिक फल-वचन हैं, अपराध का उत्तरदायित्व मिटाने, स्वास्थ्य, संपत्ति या परलोक की गारंटी नहीं।

अलग अध्याय-समापन इसे पद्म महापुराण की पंचपन हजार वाली संहिता, उत्तर खंड के उमापति–नारद संवाद का माघ शुक्ल जया एकादशी माहात्म्य, अध्याय 43 कहता है। निकट कथा कृष्ण–युधिष्ठिर संवाद ही है। यह वार्षिक जया का चयनित पूर्ण पुनर्कथन है; विजया या जया नाम वाले नक्षत्र-सम्बद्ध महाद्वादशी नियमों का मिश्रण नहीं। कोई कठोर व्रत, जागरण, अनिवार्य सामग्री या खरीद अपेक्षित नहीं।

With their old affection and ornaments restored, the two board a vimana and reach beautiful heaven. This is a Puranic vehicle, not a history of modern aircraft. They joyfully bow before Indra. Astonished, he asks what merit removed their pishacha condition and which deity released them from his curse.

Malyavan credits Vasudeva's grace, the Jaya vow and the effect of their devotion to Indra. The words addressing Indra as “your devotion” are not silently changed into devotion to Vishnu alone. Indra calls them pure, purifying and worthy of even his reverence. Humans observing Harivasara and devoted to Vishnu and Krishna are described as worthy of the gods' respect. Indra permits Malyavan to enjoy heaven with Pushpadanti: this farewell in Sanskrit unit 51 is absent from the English comparison but retained here.

Krishna tells the king that this is why Harivasara should be observed. The full close praises Jaya as removing Brahmahatya, equates its observance with all gifts and sacrifices, describes joy in Vaikuntha for crore kalpas, and assigns Agnishtoma merit to reading or hearing. These are religious benefit statements, not erasure of responsibility for wrongdoing or guarantees of health, wealth or afterlife outcomes.

The separate colophon identifies chapter 43 as the Magha Shukla Jaya Ekadashi praise in the Umapati–Narada dialogue of the Padma Mahapurana's fifty-five-thousand collection, Uttara Khanda. The immediate story remains Krishna–Yudhishthira dialogue. This is the complete selected annual Jaya retelling, not a blend with Vijaya or nakshatra-linked Mahadwadashi rules named Jaya. No severe fast, vigil, compulsory material or purchase is expected.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Jaya Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.43.1–54, revision 336424, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.